# भारतीय ज्ञान परंपरा में कला एवं संस्कृति

**प्रा. लक्ष्मण किसनराव पेटकुले**, (हिंदी विभागाध्यक्ष) एस. एन. मोर महाविद्यालय, तुमसर, जि. भंडारा

मो. नं. : ९९२१४१४२९८ ई-मेल : lkpetkule1980@gmail.com

---

भारत अर्थात् + रत = भारत अर्थात प्रकाश में रहने वाला। प्रश्न यह पड़ता है कि क्या बाकी के देश अंधेरे में रहते थे? ऐसा नहीं है। प्रकाश में रहने से तात्पर्य भारत की ज्ञान परंपरा से है। भारत में पौराणिक काल से लेकर आज तक हर क्षेत्र में ज्ञान की गंगा बहती रही है।अर्थात हर एक क्षेत्र में भारतीय ज्ञान परंपरा समृद्ध हो रही है। यहां की समृद्ध परंपराओं में भारतीय भाषाएं, उनकी लिपि, भारतीय साहित्य, आयुर्वेद, योग, भौतिक शास्त्र, सांख्यिकी शास्त्र, ज्योतिष शास्त्र, नीति शास्त्र आदि कई शाखों में भारत के विद्वान निपुण थे। यही कारण था कि पाश्चात्य आक्रांताओं ने यहां की सभ्यता संस्कृति और ज्ञान को मिटाने का भरपूर प्रयास किया। इसका जीता-जागता उदाहरण है ११९९ में बख्तियार खिलजी ने नालंदा विश्वविद्यालय को आग लगा दी जो कई महीनों तक जलता रहा। अतः इस विश्वविद्यालय के समृद्ध ग्रंथ और ज्ञान को नष्ट करने का प्रयास हुआ। इस देश को मिटाने का सपना देखने वाले स्वयं मिट गए लेकिन मेरा भारत आज भी दुनिया के सामने सीना तान के खड़ा है। इस देश को पश्चात्यों ने यहां की सभ्यता, संस्कृति आदि को मिटाना चाहा। परंतु यहां की मिट्टी में साधु, संतों, ज्ञानियों, भाषाविदों के पद स्पर्श से यहां की भूमि पावन थी। भारत केवल जमीन का एक टुकड़ा नहीं है वह हमारे लिए हमारी मातृभूमि है। यहां की भूमि पर हमारी सभ्यता संस्कृति सदियों से है। उसे बचाए रखना हमारा तथा सरकार का आद्य कर्तव्य है। और यह काम 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति' के अंतर्गत हमारी भारतीय सरकार कर रही है। आज भारत विश्व गुरु बनने के कगार पर है।भारत सदियों से विश्व को अहिंसा का पाठ पढ़ाता आया है। आज विश्व को भारत के इस विचारों की आवश्यकता है। विश्व में कोई अगर शांति प्रस्तावित कर सकता है तो वह केवल और केवल भारत ही है। भारत की सभ्यता, संस्कृति यहां की जीवन शैली पाश्चात्य राष्ट्रों को आकर्षित कर रही है। यहां की कला अद्भुत है।

कला शब्द का प्रयोग ऋग्वेद में हुआ है। इस शब्द का यथार्थ प्रयोग 'भरतमुनि' ने अपने 'नाट्य शास्त्र' में प्रथम शताब्दी में किया। कला का अर्थ है, सुंदर, मधुर, कोमल और सुख देने वाला हुनर अथवा कौशल।

कला रचनात्मक दृष्टि से जुड़ा हुआ एक काम है, यह एक मानवीय गतिविधि है, जिसमें व्यक्ति सचेत रूप से अपने भावों को बाहरी संकेतों के जरिए दूसरों तक पहुंचना है। कला कल्पना को गैर व्यावहारिक तरीके से व्यक्त करने का एक जरिया है। यह शब्दों के विपरीत है। जिनमें से हर शब्द का एक निश्चित अर्थ होता है। भारतीय ज्ञान परंपरा में कला को बहुत महत्व दिया गया है। भारतीय कला का इतिहास बहुत प्राचीन है। सातवीं शताब्दी में अजंता और एलोरा की चित्रकारिता इसका बेहतरीन उदाहरण है। भारतीय ग्रंथों में कलाओं की संख्या ६४ मानी गई। प्रबंध कोष में ७२ कलाओं की सूची है। और ललितविस्तर में ८६ कलाओं के नाम दिए गए हैं। इनमें से कुछ कलाओं का उल्लेख यहां पर हम करने जा रहे हैं।

**चित्रकला :**

चित्रकला भारतीय ज्ञान परंपरा में महत्वपूर्ण कला मानी जाती है। प्राचीन भारत में यह कला शिलाओं पर देखी जा सकती है। इस चित्रकला के माध्यम से एक चित्रकार विशिष्ट संदेश को दर्शकों के सामने पहुंचाता है। भीमबेटका की गुफाओं में बनी चित्रकार ५५०० ईसा पूर्व से भी पुरानी है। वैसे ही अजंता और एलोरा की गुफाओं की चित्रकारी सातवीं शताब्दी की है। भारतीय चित्रकला के कुछ और उदाहरण है। बाबरनामा और अकबरनामा के पन्नों पर बनी चित्रकारी, मुगल चित्रकला पारसी और भारतीय शैलियों के मिश्रण से विकसित हुई। भारतीय चित्रकला आमतौर पर भित्ति चित्र, और कपड़ों पर दिखाई देती है। भारतीय चित्रकार के प्रकारों में अंबर शैली, किशनगढ़ शैली, वारली शैली, पहाड़ी शैली आदि शैलियों का प्रयोग भारतीय ज्ञान परंपरा में दिखाई देता है।

**शिल्पकला :**

शिल्प कला एक कौशल है जो हाथ से बनाई जाती है। हिंदी में इसे हस्तकौशल, शिल्प, कारीगरी, दस्तकारी कहते हैं। यह कला भारत के प्राचीन काल से चली आ रही है। यह एक व्यवसाय है। इस व्यवसाय के चलते कई जाति समूह का उदर निर्वाह इस हस्तकला व्यवसाय के कारण चलता है। इसमें लोहार लोहे की चीजें बनाता है, कुम्हार माटी के बर्तन और मूर्तियां बनाता है, बुनकर कपड़ों पर अपनी कला दिखाता है, तो सुनार सोने की तथा चांदी के आभूषण बनाता है। प्राचीन काल से आज तक यह कला भारतीय ज्ञान परंपरा में जीवित है। यह कला घरों, मंदिरों और सार्वजनिक स्थानों को सजाने के लिए किया जाता था। पौराणिक काल में पूरी तरह यह चीजें हाथों से बनाई जाती थी। परंतु आज ऐसी कलाओं की कृति बनाने के लिए टेक्नोलॉजी का सहारा लेना पड़ रहा है। फिर भी वह कलाकारी दिखाई नहीं देती।

**संगीत कला :**

हमारी प्राचीन ग्रंथो में संगीत को गायन, वादन, एवं नृत्य का समग्र रूप माना है। जो की शारंगदेव के संगीत रत्नाकर ग्रंथ में दिए गए श्लोक से स्पष्ट है।

"गीत वाद्यम नृत्यंच त्रयं संगीत मुच्यन्ते"[१] प्राचीन समय में इन तीनों का प्रदर्शन एक साथ किया जाता था। भारतीय ज्ञान परंपरा के अनुसार संगीत की उत्पत्ति वेदों के निर्माता ब्रह्मा से मानी गई। ब्रह्मा द्वारा भगवान शंकर को यह कल प्राप्त हुई। भगवान शंकर ने इसको देवी सरस्वती को दिया। जो ज्ञान और कला की देवी कहलाती है। नारद ने संगीत कला का ज्ञान देवी सरस्वती से प्राप्त कर स्वर्ग में गंधर्व, किन्नर एवं अप्सराओं को इसकी शिक्षा दी। यहीं से इस कला का प्रचार हुआ। भारतीय ज्ञान परंपरा में संगीत सदियों से चली आ रही परंपरा है। राजा महाराजाओं के मनोरंजन के लिए दरबार में संगीत का आयोजन किया जाता था। इस संगीत के निर्माण के लिए सु-मधुर स्वर, वीणा, सारंग, संतूर, तबला आदि का प्रयोग होता था। और यह स्वर कानों पर पडते ही व्यक्ति की सारी थकान मिट जाती है। और उसमें आनंद के साथ-साथ शांति प्राप्त होती है।[२] संगीत के दो प्रकार हैं एक शास्त्रीय संगीत और दूसरा लोक संगीत। राष्ट्रीय संगीत के श्रोताओं को संगीत का ज्ञान भली भांति होता है तो लोक संगीत के श्रोताओं को इसकी आवश्यकता नहीं है। शास्त्रीय संगीत में अकबर के नवरत्नों में से एक तानसेन से लेकर आधुनिक भीमसेन जोशी तक शास्त्रीय संगीतकार होकर चले गए। जिस प्रकार शास्त्रीय संगीत की परंपरा रही है। उसी प्रकार भारत में लोक संगीत की परंपरा भी है। लोक संगीत की परंपरा भी पौराणिक है। महाराष्ट्र में वासुदेव तुनतुना लिए गीत गाने के लिए सुबह-सुबह हमारे आंगन में आ जाता है। इस तरह भजन, कीर्तन, गवलन आदि लोक संगीत के अंतर्गत आते हैं। इसका श्रोता वर्ग आम जनता होती है। जो इस लोक संगीत को सुनकर आनंद उठाती है। प्रत्येक राज्य की अपने-अपने लोक संगीत है। मराठी में प्रसिद्ध लोक गायक आनंद शिंदे का लोकगीत है , "जवा नवीन पोपट हा लागला मिठू मिठू बोलायला"[३] जो महाराष्ट्र में बड़ा ही प्रसिद्ध है।

**नृत्य कला :**

भारतीय ज्ञान परंपरा में नृत्य कला देवों के काल से ही विकसित थी। इस कला का आविष्कार कब हुआ निश्चित नहीं बताया जा सकता किंतु हमारे प्राचीन ग्रंथो में स्वर्ग की अप्सराओं का उल्लेख है जो देवों को प्रसन्न रखने के लिए अप्सरा, तथा मेनका जैसी नृत्यांगनाओं का उल्लेख मिलता है। बाद में राजा महाराजाओं के दरबार में राजाओं के मनोरंजन के लिए नृत्यांगनाएं नृत्य करती थी। हड़प्पा की खुदाई में नृत्य करती हुई लड़की की मूर्ति पाई गई है।[४] जिससे साबित होता है कि उसे काल में नृत्य कला का विकास हो चुका था। भरत मुनि का 'नाट्यशास्त्र' भारतीय नृत्य कला का सबसे प्रथम व प्रामाणिक ग्रंथ माना जाता है। इसको पंचवेद भी कहा जाता है। यह नृत्य कला भारत के अलग-अलग राज्यों में विभिन्न नामों से जानी जाती है। उदाहरणार्थ महाराष्ट्र में लावणी, राजस्थान में घूमर, तमिलनाडु में भरतनाट्यम्, उत्तर प्रदेश की रासलीला, तेलंगाना की बोडेमा, उत्तराखंड की भोटिया नृत्य, आंध्र प्रदेश की कुचिपुड़ी, असम का बिछुआ, पंजाब का भांगड़ा, केरल का कथक कली, हरियाणा का झूमर, जम्मू कश्मीर का रऊफ हिकत, छत्तीसगढ़ का मरदाना झूमर आदि नृत्य कलाएं भारत में आज

भी किए जाते हैं। भारतीयों के साथ-साथ यह कला विदेशियों को भी बहुत लुभाते हैं। तथा उन्हें अपनी और आकर्षित करते हैं।

**स्थापत्य कला :**

स्थापत्य कला से तात्पर्य वास्तुकला से है। या फिर भवन निर्माण से है। इस कला में विज्ञान और कला का अद्भुत मिश्रण दिखाई देता है। भारतीय ज्ञान परंपरा में स्थापत्य कला को बहुत महत्व दिया गया है। यह एक प्राचीन कला मानी जाती है। सिंधु घाटी की स्थापत्य कला इसवी पुर्व ५००० वर्ष पहले की मानी जाती है। इस घाटी की सभ्यता की खोज आश्चर्य जनक है यहाँ की नगर रचना इतनी परिपक्व थी कि, उनके द्वारा प्रयुक्त सामग्री आज भी जैसे के तैसे संग्रहालय में भारी पड़ी है। इससे तात्पर्य है कि मोहनजोदड़ो और हड़प्पा की खुदाई में मिले कई वस्तुओं की सामग्री उच्च कोटि की थी। इसके बाद मुगलकालीन वास्तु जो भारत पर इसका बहुत बड़ा प्रभाव दिखाई पड़ता है। मुगल काल में कई सारे मंदिर गिरा कर वहाँ मस्जिद बनाई गई। हमारे यहां अशोक सम्राट कालीन बौद्ध स्तूप है जो वास्तु कला का अद्भुत नमूना है। महाराष्ट्र में कारले भाज्या की लेनियाँ तथा औरंगाबाद में वेरूल अजिंठा की लेनियाँ, यह सब वास्तु कला का अद्भुत नमूना कहा जा सकता है। इसी के साथ भारतीय ज्ञान परंपरा में हिंदू संस्कृति में कई देवी देवताओं के मंदिर बांधे गए। कोणार्क का सूर्य मंदिर विज्ञान और कला का अद्भुत उदाहरण है। इस प्रकार भारत के कई हिस्सों में ऐसे कई मंदिर दिखाई पड़ते हैं। तमिलनाडु का बृहदेश्वर मंदिर, एलोरा का कैलाश नाथ मंदिर, कर्नाटक का चेन्नेकेश्वर मंदिर, उत्तराखंड का तुंगनाथ मंदिर, मध्य प्रदेश का ओरछा मंदिर आदि मंदिरों पर देवी देवताओं की मूर्तियां तथा हाथी, घोड़े और कई प्रकार के फूल, पशु, पक्षी आदि के चित्र तथा डिझाइन वास्तु कला का बेजोड़ नमूना भारत के पौराणिक वस्तुओं पर दिखाई पड़ते हैं जो हमारे सुनहरे इतिहास की गवाही देते हैं।

**काव्य कला :**

काव्य कला भारतीय ज्ञान परंपरा का अभिन्न अंग है। यह कला भी प्राचीन कलाओं में से एक मानी गई है। इस कला में शब्द और अर्थ पर आधारित 'स्वर' एवं 'व्यंजन' दोनों प्रयुक्त होते हैं काव्य कला से कवि और वाचन दोनों को आनंद प्राप्त होता है। कवि अपनी कविता से एक निश्चित संदेश को पाठकों तक पहुंचाने का कार्य करता है। प्राचीन भारत के प्रथम हिंदी महाकवि चंद्रवरदाई माने जाते हैं। इसके अलावा संस्कृत में अश्वघोष, भास, भवभूति, बाणभट्ट, भारवी, माघ, विशाखा दत्त, शूद्रक आदि कवियों का योगदान भारतीय ज्ञान परंपरा में महत्वपूर्ण है। महाकवि कालिदास को हम नहीं भूल सकते जिन्होंने मेघदूत, रघुवंशम, कुमारसंभव, शकुंतलम आदि कवियों का निर्माण कर अगर अमर हो गए।

**पाक कला :**

भारतीय पाक-कला ८०० वर्षों से भारत के अलग-अलग क्षेत्र और समाज के साथ संबंध रखते आ रहा है। जिसके कारण इसके स्वाद और क्षेत्र की कला आज के काल में भी लोकप्रिय है। शास्त्रों और ग्रंथों में भारतीय भोजन में फल, सब्जियां, कई प्रकार का धान्य जैसे ज्वार, बाजरी, धान, मूंग, उड़द, मकई आदि अनाज और फल फूलों का प्रयोग अपने भोजन में करता आया है। में अनाजों से कई प्रकार के व्यंजन भारत के हर राज्य में बनाए जाते हैं उदाहरणार्थ दक्षिण भारत की इडली, उत्तप्पा, बड़ा सांभर, उत्तर भारत की दाल बाटी, बिहार का लिट्टी चोखा, पंजाब का सरसों का साग, छोले भटूरे, महाराष्ट्र की पूरनपोली, मिसल पाव, राजस्थान की इमरती जलेबी, दाल बाटी, चूरमा। गुजरातियों का ढोकला, फाफड़ा, खाकरा, बंगाल का रसगुल्ला आदि भारतीय व्यंजन खूब पसंद किए जाते हैं। भारतीय व्यंजनों की जब बात आती है। तब भारतीय मसालों का जिक्र होना स्वाभाविक है। यहाँ के मसालों में दालचीनी, काली मिर्च, लवंग, ईलाइची, तेजपान, खशखश आदि मसालों का उपयोग कर भारतीय व्यंजन बनाए जाते हैं। जो स्वाद के साथ-साथ जायकेदार भी होते हैं। भारतियों के साथ-साथ इन व्यंजनों का स्वाद विदेशी भी लेते हैं जो हमारे भारतीय ज्ञान परंपरा में निहित है।

***भारतीय ज्ञान परंपरा में संस्कृति :**

भारतीय संस्कृति को कई विद्वानों ने विश्व की सबसे प्राचीन संस्कृति मानी है। भारत के हर राज्य में अपनी अपनी संस्कृति देखी जाती रही है जिसमें अपनी अपनी पेहराव पद्धति, खान-पान, त्यौहार-उत्सव, विवाह संस्था, संयुक्त परिवार पद्धति, देवी-देवताएँ आदि भारतीय संस्कृति के परिचालक कहलाते हैं। हमारी पारिवारिक संस्था आज भी टिकी हुई है इसका कारण यह है कि भारतीय संस्कृति और परंपराएं यहां की पीढ़ी दर पीढ़ी को हस्तांतरित करते रहते हैं। भारत की ज्ञान परंपरा में कहीं विषयों का अंतर्भाव होता है जिसमें आयुर्वेद, ज्योतिष, दर्शनशास्त्र, खगोल शास्त्र, वनस्पति शास्त्र, भौतिक शास्त्र, प्राणी शास्त्र, स्थापत्य शास्त्र, व्याकरण आदि ज्ञान शाखाएँ हमारे प्राचीन ग्रंथो में अर्थात वेद, पुराण, महाभारत, रामायण आदि मे मिलते हैं। इन शास्त्रों का अध्ययन करने के लिए भारत से ही नहीं बल्कि विदेश के अनेक देशों से नालंदा विश्वविद्यालय में ज्ञानार्जन के लिए आते थे।

शास्त्रों के अलावा हमारे ज्ञान परंपरा में कई कलाओं का समावेश भी देखा जा सकता है। जैसे चित्रकला, संगीत कला, नृत्य कला, वास्तु कला, पाक कला, मूर्ति कला आदि कलाएं भारत के विभिन्न राज्यों में इतरास्त्र फैली हुई दिखाई देती है। भारतीय ज्ञान परंपरा में हमारे प्राचीन ग्रंथो में सत्य, अहिंसा, अपरिग्रह, नैतिकता आदि जीवन मूल्य भारतीय संस्कृति में पाए जाते हैं। भारत में कृषक संस्कृति को अनन्यसाधारण महत्व दिया गया है। क्योंकि भारत एक कृषि प्रधान देश है। कृषि पर ही हमारी अर्थव्यवस्था टिकी हुई है। इसीलिए हमारी कृषि परंपरा सदियों से चली आ रही है। आज भी हम देखते हैं रासायनिक खाद और औषधियों से खेती की जा रही है जो हमारे स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है। फिर एक बार भारत रासायनिक खेती को छोड़कर ऑर्गेनिक खेती की दिशा में आगे बढ़ रहा है।

हम देखते हैं कि आज विश्व तीसरे विश्व युद्ध के कगार पर खड़ा है ऐसी परिस्थितियों में भारत शांति का संदेश समस्त विश्व को दे रहा है। भारतीय संस्कृति हमें तोड़ना नहीं सिखाती बल्कि वह हमें जोड़ना सिखाती है यही कारण है कि विश्व में जहां भी प्राकृतिक आपदा हो, या मानव निर्मित कोई संकट हो ऐसी परिस्थितियों में भारत अपनी जिम्मेदारियां खूब जानता है। अतः कोरोना महामारी के समय संपूर्ण विश्व प्रभावित था इस महामारी के कारण लाखों लोगों की जानें चली गई। इसकी औषधि की खोज भारत ने लगाई और यह औषधि भारत के साथ-साथ जो गरीब देश है उनको भी उपलब्ध कराकर दी है। हमारी संस्कृति हमें यही संस्कार देती है कि हमेशा संकट में दूसरों की मदद करना।

**निष्कर्ष :**

निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं कि, भारतीय ज्ञान परंपरा अत्यंत व्यापक है। इसके अंतर्गत कई विद्या शाखाएं निहित है। जिसमें संस्कृत भाषा में लिखित कई ग्रंथों, वेद, पुराणों, उपनिषेदों, व्याकरण आदि गथों में भारतीय ज्ञान और भारतीय संस्कृति का सार लिखा है। जो प्राचीन काल से लेकर आधुनिक काल तक विश्व भर को अपनी ओर आकर्षित करता रहा है। यही कारण है कि, भारत सरकार ने नई शिक्षा नीति के माध्यम से फिर एक बार यहां के जनमानस में भारतीय ज्ञान को प्रतिष्ठापित कर विश्व को नई दिशा देने का प्रयास कर रही है।

**संदर्भ :**

1. https://epustakalay.com
2. https://uou.ac.in
3. https://gaana.com/song
4. https://www.jagranjosh.com
5. https://www.jagranjosh.com
6. https://hi.wikipedia.org